आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:03-11-14

हमें आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर, राजयोगी बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, यह बाप तुम्हें जो शिक्षा देते हैं जो फिर औरों को देनी है.

आज की बाबा की मुरली में राजयोग का सारा ज्ञान है. बाबा की आज की मुरली से राजयोग सिखलाने में मदद मिले इसके लिए बाबा ने जो भी पॉइन्टस कहे है उसे अलग-अलग सेक्शन में रखकर पढ़ेंगे.

आत्मा का ज्ञान -

- सारी दुनिया की जो सभी मनुष्य आत्माये, सभी आपस में भाई-भाई हैं. सभी आत्माये अपना मिला हुआ पार्ट इस शरीर द्वारा बजाते हैं.

परमात्मा का परिचय का ज्ञान -

- सभी मनुष्य आत्माओं का वह बाप हैं. सभी आत्माये भाई-भाई है और हमारा बाप भी एक हैं. हम सब है सोल्स, वह है सुप्रिम सोल. उनको फादर कहा जाता हैं.

- सब आत्माये कहती है ग़ॉड फादर, परमपिता-परमात्मा, अल्लाह. पहले यह निश्चय बिठाना है कि हम आत्माये है, परमात्मा नहीं हैं. सर्व में परमात्मा नहीं हैं. सर्व में आत्मा व्यापक हैं.

- अभी सब आत्माये पतित हैं, एक भी पावन नहीं. सभी आत्माओं को पावन बनाने वाला, एक ही बाप हैं.

- बाप अपना परिचय खुद ही आकर देते है. खुद कहते है मैं आता हूँ पतितो को पावन बनाने के लिए तो मुझे शरीर जरूर चाहिए. नहीं तो बात कैसे करु. मैं सत हूँ, चैतन्य हूँ और अमर हूँ.

- वह है मनुष्य सृष्टि का बिजरुप. वही सारे वृक्ष की नॉलेज समझाते है. शिवबाबा का नाम सदैव शिव ही है. बाकी सब आत्माये पार्ट बजाती है तो भिन्न-भिन्न नाम धरती है.

सृष्टि चक्र का ज्ञान -

- सतयुग-त्रेता पास्ट हुआ. उनको कहा जाता है स्वर्ग और सेमी-स्वर्ग. वहाँ देवी-देवताओं का राज्य चलता है. सतयुग में है १६ कला, त्रेता में है १४ कला.

- सतयुग का प्रभाव बड़ा भारी है. नाम ही है स्वर्ग - हेविन. नई दुनिया सतयुग को कहा जाता है. उसकी ही महिमा करनी है. नई दुनिया में है एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म. सृष्टि

का चक्र फिरता है. इस कल्प की आयु ५ हजार वर्स हैं. अब सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी तो बुद्धि में बैठा. विष्णुपुरी बदल, राम-सिता पुरी बनती हैं.

- सतयुग-त्रेता में सब निर्विकारी रहते हैं. एक आदि-सनातन देवी-देवता धर्म रहता हैं.

- दो युग पास्ट हुए फिर आता है द्वापर. रावण राज्य. देवताये सब वाम मार्ग में चले जाते है तो विकार का सिस्टम बन जाता हैं.

- अब तुम हो संगम पर. बाबा दोनों तरफ का ज्ञान तुम्हें बतलाते हैं. अभी तुम्हारी आत्मा बाप कि याद से पतित से पावन बनती है तो शरीर भी पावन बनता हैं. अभी आत्मा पतित है तो शरीर भी तमोप्रधान है फिर आत्मा पावन बनती है तो शरीर भी सतोप्रधान बनता हैं.

<u>कर्म-अकर्म-विकर्म का ज्ञान</u> -

- आत्मा ही पतित, आत्मा ही पावन बनती है. आत्मा में ही सब संस्कार हैं. पास्ट के कर्म वा विकर्म का संस्कार आत्मा ले आती है.

- सतयुग में तो विकर्म होता नहीं, कर्म करते है, पार्ट बजाते है. परन्तु वह कर्म अकर्म बन जाता है.

- बाबा आया हुआ है पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया बनाने, जहॉ कर्म अकर्म हो जाते हैं. उनको ही सतयुग कहा जाता है और यहॉ फिर यह कर्म विकर्म ही होते है इसे कलियुग कहा जाता है.

<u>धारणा (पवित्रता और वैराग्यता) का ज्ञान</u> -

- पहले थी नई दुनिया पवित्र, अब है पुरानी दुनिया अपवित्र. आत्मा में ही खाद पड़ती हैं. तो सारे मनुष्य उनको बुलाते है आकर पावन बनाओ. बाप-सतगुरु का ही काम है वानप्रस्थ अवस्था में मनुष्यों को ग्रहस्थ से किनारा कराना.

<u>ब्रह्मा का परिचय</u> -

बाप को बुलाते है पर उन्हें जानते नहीं - वह कैसे भाग्यशाली रथ में आते है तुमको पावन दुनिया में ले चलने. बाप खुद समझाते है मैं आता हूँ उनमें जो बहुत जन्म लेते है, पुरा ८४ जन्म लेते है. राजाओं का राजा बनाने के लिए इस भाग्यशाली रथ में प्रवेश करते है. यही फिर नई दुनिया में पहले नम्बर में श्रीकृष्ण बनते हैं. वह है नई दुनिया का मालिक फिर निचे उतरते है. सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, फिर वैश्य, शूद्र वंशी फिर ब्रह्मा वंशी बनते है.

ॐ शांति.